

प

1. प (von पा, पिबति) am Ende eines comp. *trinkend* H. 7; s. अक्रिप, अनेकप, आद्यप, ऊष्मप, कालालप, क्षीरप, गन्धप, सिक्काप, तैलपा (f.), दृष्टिप, द्विप, धूमप, पानप, मद्यप, मधुप, मांसप, शीघुप, सुराप, सोमप und पा. Nach P. 3, 2, 8 soll das f. पा lauten, aber ein Vārtt. beschränkt diese Form auf शीघुपी und सुरापी, neben denen aber auch die Form auf आ erscheint. Das f. पा soll nach MED. p. 1 nom. act. (*das Trinken*) sein; nach EKĀKSHARAK. im ÇKDr. das m.

2. प (von पा, पाति) am Ende eines comp. *hütend, beschützend*: मद्रप s. v. a. मद्रेश MBh. 1, 4432. वृक्षिप HARIV. 14467. अश्मकप VARĀH. BRH. S. 11, 55. Vgl. 1. अज्ञप, काशिप, कुलप, नितिप, गोप, चमूप, जन्मप, दशप, दावप, दैत्यप, द्वारप, धानुप, नक्षत्रप, निधिप, नृप, प्रतिकारप, भूमिप, विशप und पा. Das f. पा ist nach MED. p. 1 nom. act. *das Hüten*.

3. प 1) m. Wind TRIK. 1, 1, 76. MED. p. 1. EKĀKSHARAK. im ÇKDr. Ei und = पूत MED. — 2) f. पा = पूत und पूरितक MED.

पंश्च und पंस्, पंशति und पंसति, पंशयति und पंसयति *vernichten* (नाशन) Dhātup. 32, 73.

1. पक = 1. प in तैलपक.

2. पक = 2. प in कृत्तिपक.

पकथ m. N. pr. eines Mannes mit dem patron. Saubhara: पकथस्य (oder पथ; oder पकथस्य) सौभरस्य साम Ind. St. 3, 222. Die richtige Form ist पकथ.

पक्कटो f. N. eines Baumes, *Thespesia populnea* Corr., NIGH. PR.

पक्कण m. die Hütte eines Wilden, eines क्कण्ण AK. 2, 2, 20. H. 1002. HALĀS. 2, 106. मध्येविन्ध्यादवि पुरा पक्कणस्यजनाग्रणीः । पक्षीपतिरभूदुयः पिङ्गान्त इति विभ्रुतः ॥ KĀÇIKH. 12, 16 bei AUFR. zu HALĀS. चाण्डालस्य च पक्कणो (sic) MBh. 12, 5330. 5353. — Vgl. पक्कश.

पक्कपौड m. eine best. Pflanze, = पञ्चकृत्य, पञ्चरक्त, वर्धन, im Hindi पक्कौडा RĀGĀN. im ÇKDr.

पक्कर (von पच्) nom. ag. *der da kocht, brät, backt* (transit.) u. s. w. AV. 10, 9, 7. 11. 25. श्रोतनस्य 11, 1, 17. 12, 3, 17. ÇAT. Br. 10, 4, 2, 19. इत्येदे वः पक्तास्मि 3, 3, 4, 17. अन्नमद्यं च पक्ता च पक्कमुकपवनो ऽनलः MBh. 12, 10395. ĀGNEJA-P. 2 im ÇKDr. *die Verdauung fördernd* Suçr. 1. 189, 13.

पक्तव्य (wie eben) adj. *zu kochen, zu backen* P. 8, 2, 30, Sch. बदराणि MBh. 9, 2787.

पक्ति (wie eben) f. parox. nur in VS. und in der späteren Sprache: vgl. VS. PRĀT. 2, 64. P. 3, 3, 95. fg. 1) *das Kochen, Zubereiten von Speisen* TRIK. 3, 3, 172. H. a. n. 2, 176. MED. t. 30 (पक्किः ist an den beiden letzten Orten nur Druckfehler). वैवाहिके ऽग्नौ कुर्वति — पक्ति चान्वाहिकी द्विजः M. 3, 67. अन्नं 9, 11. श्रोतनं P. 6, 4, 15, Sch. — 2) *ein gekochtes Gericht*: पचन्पक्तीः पचन्पुराडाशान् VS. 21, 59. RV. 4, 24, 5. य इन्द्राय मुनवत्सोममथ्य पचात्पक्तीरुत भूजाति धानाः 7. 28, 6. 7. 6, 20, 4. — 3) *Verdauung* M. 12, 120. JĀGĀN. 3, 77. Suçr. 1, 48, 5. °नाशन 177, 21. °स्थान *Ort der Verdauung* 2, 400, 15. auch ohne स्थान dass. 1, 245. 2. — 4) *das Reifwerden* so v. a. *Entwicklung*: कर्मार्जितं पूर्वभवे सदादि पत्तस्य पक्ति (die Folgen) समभिव्यनक्ति (कारा) VARĀH. BRH. 1, 3. शरीरपक्कि (sic) MBh. 12, 9745. — 5) *das Angesehensein, Würde*; = गौरव TRIK. H. a. n. MED. Suçr. 1, 51, 20. 313, 5. लोकपक्ति *das Angesehensein bei der Welt* ÇAT. Br. 11, 3, 2, 1. तत्र बाह्यज्ञानेन लोकपक्किलोकानुरागः (sic) GAUDAP. zu SĀMĀHJAK. 23. पक्तिप्रूल (प° + प्रूल) n. = परिपामप्रूल (s. d.) RĀGĀN. im ÇKDr. पक्क (von पच्) UNĀDIS. 4, 166. n. = गार्कपत्य n. *der Stand des Hausherrn, der Besitz eines eigenen Heerdes* UśĀVAL. *das von dem Haushälter beständig unterhaltene Feuer* AUFR. WILS. = गार्कपत्याग्नि UNĀDIK. im ÇKDr.

पक्किम (wie eben) adj. *durch Kochen gewonnen* P. 3, 3, 88, Sch. TRIK. 3, 1, 20. mit Ergänzung von लवणा *durch Kochen gewonnenes Salz* Suçr. 1, 157, 8.

पक्क्यं m. N. pr. eines Schützlings der Aqvin RV. 8, 22, 10. 10, 61, 1. VĀLAKH. 1, 10. पक्क्यस्य सौभरस्य साम Ind. St. 3, 222; vgl. पकथ. pl. Bez. eines Volksstammes RV. 7, 18, 7.

पक्क्यन् wohl N. pr., nach SĀJ. so v. a. (*das Opfer*) *kochend* (von पच्): द्वाददितुभ्यं सोमैभिः मुन्वन्दुमिति रिधमभतिः पक्क्यर्कैः RV. 6, 20, 13.

पक्क (von पच्) adj. (*vertritt die Stelle des partic. praet. pass.*) f. छा P. 8, 2, 52. Vop. 26, 99. *das n* einer Casusendung (पक्कन, पक्कानि, पक्कानाम्) geht in keinem comp. in ण über nach 3, 30 (vgl. 6, 9). 1) *weich-*